अधिगम

शैक्षिक शोध एवं संदेश पत्रिका

अंक–14, मार्च 2020

राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश

प्रयागराज।

अधिगम

ISSN 2394-773X

शैक्षिक शोध एवं संदेश पत्रिका

© राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

✪ सलाहकार सम्पादक मण्डल

डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ

प्रो0 परशुराम पाल, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. धनंजय चोपड़ा, पाठ्यक्रम समन्वयक, सेन्टर ऑफ मीडिया स्टडीज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

राजू पारगी, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

डॉ0 सन्तोष कुमार चतुर्वेदी, एसो0 प्रोफेसर (इतिहास), महामति प्राणनाथ महाविद्यालय, मऊ, चित्रकूट

✪ प्रधान सम्पादक

डॉ0 आशुतोष दुबे, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

✪ सम्पादक मण्डल

नीलम मिश्रा, मंजुलेश विश्वकर्मा, डॉ0 संध्या सिंह, शोध प्राध्यापक, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

दीपा मिश्रा, अंशिका यादव, स0उ0शि0नि0(प्र0), राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

वैधानिक सलाहकार : श्री वीरेन्द्र सिंह, एडवोकेट, इलाहाबाद हाईकोर्ट

प्रकाशक : राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

वितरण : निःशुल्क

कम्प्यूटर ले–आउट : राजेश कुमार यादव

'अधिगम' राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश की त्रैमासिक शैक्षिक शोध एवं संदेश आधारित पत्रिका है। पत्रिका का मुख्य लक्ष्य है– शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़े हुए समस्त वर्गों तक, देश व प्रदेश में शिक्षा से जुड़े मुद्दों से सम्बन्धित जानकारियाँ पहुँचाना तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शैक्षिक नवाचार, प्रबन्धन, मूल्यांकन व शोध अध्ययन से सम्बन्धित रणनीतियों को प्रयोग में लाने हेतु उपयोगी सामग्री प्रदान करना।

पत्रिका में प्रकाशित लेख तथा विचार लेखकों के स्वयं के हैं जिसका उत्तरदायित्व भी उनका स्वयं का है। अतः प्रकाशित लेखों के माध्यम से संस्थान की नीतियों को प्रस्तुत नहीं किया गया है और इसके लिए संस्थान का कोई उत्तरदायित्व नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेख या उनका कोई भी अंश संस्थान की अनुमति के उपरान्त ही प्रकाशित किया जा सकता है।

lEikndh;

आवश्यकताएँ अनन्त हैं और यह जगत् निरन्तर परिवर्तनशील है । मानव विवेकशील प्राणी है । वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में सतत लगा रहता है । शाश्वत परिवर्तनधर्मा परिवेश में उसकी प्राप्तव्य इच्छाएँ भी परिवर्तित होती रहती हैं । परिणामस्वरूप उसकी प्राप्ति की विधियाँ और प्रविधियाँ भी निरन्तर संशोधन की अपेक्षा करती हैं । यही कारण है कि नवीन शोधों की महती आवश्यकता जन्म लेती है । सुधीजन निरन्तर अन्वेषण तथा अन्वेषित का बार–बार परीक्षण करते हैं जिससे समसामयिक समस्याओं के समाधान की उपयुक्ततम विधि ज्ञात की जा सके ।

शिक्षा एक अनिवार्य तथा निरन्तर गतिशील क्रिया है । प्रत्येक व्यक्ति आजीवन सीखता रहता है । वह निरन्तर कर्मरत रहते हुए आत्मतुष्टि हेतु प्रयासरत रहता है । इस आत्मानन्द की प्राप्ति का जो तरीका वह सही पाता है उसको वह अन्यों को बताता है। इस प्रकार सर्वमान्य सिद्धान्तों का आविर्भाव होता है । ये मान्य सिद्धान्त तथा विधियाँ इस अस्थिर लोकजीवन में अनुसन्धाताओं द्वारा संशोधित तथा परिवर्द्धित होती रहती हैं; क्योंकि समसामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाधान की विधियों का अद्यतन होना सर्वथा आवश्यक होता है। समस्या आधुनिक तथा उसके समाधान का उपाय प्राचीनतम होना नितान्त हास्यास्पद तथ्य है। 'अधिगम पत्रिका के प्रकाशन के मूल में भी यही भावना बीज रूप में विद्यमान है।

सम्प्रति प्राथमिक शिक्षा सर्वशिक्षा की नीति का कार्यान्वयन करने में सन्नद्ध है । इस हेतु विविध स्तरों पर शोध कार्य किये जा रहे हैं । इसी क्रम में राज्य शिक्षा संस्थान उ0प्र0 द्वारा 'अधिगम' का चौदहवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें तात्कालिक विषयों– पूर्व प्राथमिक शिक्षा : महत्त्व तथा कार्यान्वयन; प्राथमिक अध्यापकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन तथा पर्यावरण विज्ञान की शिक्षा को समाहित किया गया है । श्रीमद्भगवद्गीता को भारतीय अभिप्रेरणात्मक ग्रन्थों में अन्यतम माना जाता है । इस ग्रन्थ में अभिवर्णित संवादों तथा प्रेरक अभिकथनों ने युद्ध भूमि में धनुष को फेंक देने वाले अर्जुन को महाभारत युद्ध का सबसे बड़ा संहारक योद्धा बना दिया था । आज कतिपय व्यक्तियों ने इसमें वर्णित वर्णाश्रम व्यवस्था तथा अन्य कुछ शिक्षाओं पर प्रश्न उठाना आरम्भ कर दिया है । इनके द्वारा इस ग्रंथ को तानाशाही व्यवस्था का पोषक बताना आरम्भ कर दिया गया है । इसके उत्तरस्वरूप एक लेख 'श्रीमद्भगवद्गीता में समाजवाद' भी इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त कुछ अन्य शोधात्मक लेखों को भी इस अंक में समाविष्ट किया गया है । आशा है यह अंक शिक्षाजगत् हेतु उपयोगी होगा ।

यत्किञ्चित् त्रुटियों के सुधारार्थ तथा उपयुक्त को उपयुक्ततम बनाने हेतु विद्वज्जनों द्वारा दिये गये सुझाव हमारे सामर्थ्य में अभिवृद्धि करेंगे । अतः परामर्शात्मक विचारों को हम प्रणतिपुरस्सर साभार स्वागत करेंगे ।

मार्च, 2020

(डॉ0 आशुतोष दुबे)
प्राचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान,
उ0प्र0, प्रयागराज ।

अधिगम

मार्च– 2020 अंक– 14

çLr|r vd e

क्र.सं.	शोध पत्र एवं आलेख	पृ0सं0
1	पूर्व प्राथमिक शिक्षा : महत्त्व तथा कार्यान्वयन डॉ0 आशुतोष दुबे	05–09
2	सामाजिक विषमता और दामोदर मोरे की कविता प्रो0 परशुराम पाल	10–17
3	सामाजिक चेतना और हिन्दी पत्रकारिता डॉ0 राजीव पाल	18–21
4	पर्यावरण विज्ञान की शिक्षा : आवश्यकता, अवसर व चुनौतियाँ डॉ0 मणि सिंह रीना सिंह पी0के0 सिंह	22–25
5	दलितोत्थान पर महात्मा गांधी के विचार एवं योगदान डॉ0 मनोज कुमार राय देवेंद्र मौर्य	26–29
6	श्रीमद्भगवद्गीता में समाजवाद प्रो0 जितेन्द्र कुमार द्विवेदी	30–33
7	भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में लोकतत्त्व डॉ0 दिव्या वर्मा	34–38
8	ग्लोबलाईजेशन के दौर में ललित कला में उच्च शिक्षा डॉ0 किरन मिश्रा	39–44
9	रॉबर्ट नॉजिक का न्याय सिद्धान्त एवं संपत्ति का अधिकार आदित्य कुमार	45–49
10	प्राथमिक अध्यापकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन बुद्ध सिंह शुभांगी वर्मा	50–59
11	शिक्षा और इंटरनेट मीडिया : एक अध्ययन डॉ0 अभिषेक मिश्र	60–65
12	पुरुषार्थचतुष्टयप्रतिपादने व्याकरणशास्त्रस्योपादेयता अमरनाथ पाण्डेय	66–69
13	Socio-Economic Disquietude In The Novels of George Orwell Dr. Chandra Bhushan Gautam	70–73
14	Preparing Students For PISA 2021 : Scientific Literacy Juhee Rai	74–82